हमारे और आदिम जनजातियों के शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के प्रति चेतना

– विकास कुमार
(एम.एस.डब्ल्यू)

बंगाल की खाड़ी में उत्तर से पश्चिम तक फैली छोटे बड़े हरे भरे द्वीपों और चटटानों की श्रृंखला, अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह छह प्रकार की जनजातियों का बसेरा रहा है । ये है, ग्रेट अण्डमानी, ओंगी, जारवा, सेंटीनली, निकोबारी और शोम्पेन । इनमें ग्रेट अण्डमानी, ओंगी, जारवा और सेंटीनली अण्डमान द्वीपसमूह में बसने वाली निग्रेटो नस्ल की आदिम जनजातियां हैं, जबकि शोम्पेन ग्रेट निकोबार में रहने वाली मंगोलाईट नस्ल की आदिम जनजातियां हैं ।

निकोबार द्वीपसमूह और लिटिल अंडमान में बसने वाले निकोबारी जनजाति के लोग बहुत पहले से ही आधुनिकता की मुख्य धारा में शामिल हैं । इनकी जनसंख्या द्वीपों की आदिम जनजातियों की कुल संख्या से बहुत ज्यादा इस समय 25 हजार के आस–पास होगी।

सदियों से समुद्र के बीच द्वीपों की अपनी ही दुनिया में आदिम युग के माहौल में अब तक सांस लेते आए यहां की आदिम जनजातियों के कबीले बाहरी दुनिया के लोगों के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैय्या अपनाते आए हैं । अपनी दुनिया में अजनबियों का हस्ताक्षेप इन्हें कतई बर्दाशत नहीं रहा है और जब भी उनकी धरती पर किसी विदेशी ने कदम रखने की कोशिश की उसे उनके जानलेवा तीरों का शिकार होना पड़ा ।

सोलहवीं शताब्दी में जब भारत और पूर्वी देशो में यूरोपीय शक्तियों का आगमन हुआ, तब इन द्वीपों के इतिहास का एक नया अध्याय शुरू हुआ । पहले ये